[Conference- Innovation in Music & Dance :January,2015] ISSN- 2350-0530(O) 2394-3629(P)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i1SE.2015.3501

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

नेतत्व, सहयोग, प्रबन्धन एवं नवाचार में संगीत–एक रूपकालंकार

डॉ. स्मिता खानवलकर
प्राध्यापक 'कंठ संगीत'
शास. महारानी लक्ष्मीबाई कन्या स्नात. महाविद्यालय इन्दौर(म.प्र.)

सम्पूर्ण विश्व में विशेषकर पाश्चात्य देशों में अधिकांश कार्यकारी समूहों में उनके कार्यनिष्पादन में सकारात्मक वृद्धि हेतु विभिन्न प्रकार का संगीत प्रयुक्त किया जाता है। जिनमें गूगल, ओरॅकल, रोल्स रायस, सीमेन्स, लॉरियाल, डचबैंक, बीबीसी, नोकिया, सेन्डोज, मोर्गन स्टेनले आदि कईं संस्थानों के नाम प्रमुखता से लिये जा सकते हैं। ये सभी संस्थान अपने क्षेत्र में वर्चस्व स्थापित कर चुके हैं एवं प्रबन्धन के क्षेत्र का प्रत्येक व्यक्ति इनके नाम से अछूता नहीं है।

इन संस्थानों में उनके वरिष्ठ नेतृत्व को प्रशिक्षित करने के लिये उन्हें प्रकारान्तर से (बैन्ड एवं वाद्यवृन्द के माध्यम से) संगीत सुनवाया जाता है। जो निश्चित तौर पर उन्हें स्वयम्, सहयोगियों तथा कनिष्ठ साथियों के साथ मिलकर प्रबन्धकीय क्षमताओं को सही दिशा में अंजाम देने हेतु प्रेरित करता है।

संगीत की सार्वभौमिक भाषा इसके आधारभूत सिद्धान्तों (संरचनात्मक आधार, लयात्मकता, सम्प्रेषण, श्रवण, अवधि(काल), ध्वनि, सामन्जस्य) के माध्यम से नेतृत्व तथा प्रबन्धन की नवीन एवम् पुरातन संकल्पनाओं का सरलता व स्पष्टता से आव्हान करती है।

हमारे दैनन्दिन जीवन में उक्त सभी पहलू व्यक्तिगत तथा व्यावसायिक स्तर पर किस प्रकार कारगर सिद्ध होते हैं, यह दर्शाने का प्रयास इस शोधपत्र के माध्यम से किया गया है।

प्रबन्धकीय श्रेष्ठता के लिये हमें कार्यनिष्पादन/प्रदर्शन के समय किस प्रकार समस्वरणीय (In tune) रहना है, यह स्पष्ट करना ही इस शोध पत्र का उद्देश्य है।

पूर्व में बतलाये गये आधारभूत सिद्धान्तों का यदि हम सांगीतिक सन्दर्भों में विचार करें तो संरचनात्मक आधार अर्थात् समस्त गायन–शैलियां, लयात्मकता अर्थात् उनका विभिन्न लयों में प्रस्तुतिकरण (प्रस्तोता का मानसिक प्रबन्धन), सम्प्रेषण अर्थात् भावाभिव्यक्ति एवं सामन्जस्य अर्थात् संगतकारों के साथ समन्वय आदि के माध्यम से सहयोग एवं प्रबन्धन में संगीत किस प्रकार सहायक सिद्ध होता है? यह समझा जा सकता है।

संगीत की विभिन्न विधाओं, जैसे– शास्त्रीय संगीत, वाद्यवृन्द, सुगम फिल्म संगीत एवं फ्यूजन संगीत में विभिन्न स्तरों पर नेतृत्व, प्रबन्धन, सहयोग आदि में संगीत किस प्रकार घुलमिलकर एकाकार/एकरूप हो जाता है? यह हम इन विधाओं के प्रस्तुतिकरण के समय सहज ही महसूस कर सकते हैं।

शास्त्रीय संगीत में सहयोग एवं प्रबन्धन हेतु निम्नलिखित बिंदु आवश्यक प्रतीत होते हैं–

- श्रवण एव तत्पश्चात् की प्रतिक्रिया में संतुलन।
- उपक्रम एवम् स्वतःप्रवृत्ति।
- बुद्धिसंगत व्याख्या एवम् भावात्मक प्रवाह।
- भावात्मक प्रबलता।
- तकनीकी सुस्पष्टता ।
- आत्मानुशासन।
- एकाग्रता तथा ऊर्जस्विता।
- प्रदर्शन में वैयक्तिक एवम् सामूहिक उत्तरदायित्व।

सामंजस्यपूर्ण एवं असाधारण परिणाम की निरन्तर खोज हेतु विश्वास, सहयोग एवम् समन्वय की अन्तःप्रेरणा अपरिहार्य है।

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

भारतीय शास्त्रीय संगीत के अलावा एक और सांगीतिक विधा है, जिसमें नेतृत्व, सहयोग, समन्वय तथा प्रबन्धन के माध्यम से व्यक्ति अथवा व्यक्ति–समूह अपनी कार्यकुशलता में उल्लेखनीय वृद्धि कर सकते हैं यह विधा है – वाद्यवृन्द (Orchestra)। वाद्यवृन्द एक ऐसी विधा है जिसमें हम अवाचिक (Non-Verbal) संवाद का असीम सामर्थ्य देखते हैं।

वाद्यवृन्द प्रस्तुतिकरण के समय हम प्रबन्धन एवं सहयोग के जो विभिन्न बिन्दु देखते हैं, उनमें से कुछ ये हैं –

- श्रवण।
- वैयक्तिक दायित्व।
- आपसी सहयोग व समन्वय।
- सहयोगियों पर विश्वास।
- स्वयं की तैयारी।
- तकनीकी वैशिष्ट्य।

उपरोक्त सभी बिन्दुओं के माध्यम से वृहद समूहों (Corporate) में महत्वपूर्ण कार्य–निष्पादन में वाद्यवृन्द किसप्रकार प्रतिबिम्बित होता है, यह ध्यान देने योग्य बात है।

एक संगीतज्ञ प्रबन्धकीय सन्दर्भों में अपना अंतःप्रेरक नेतृत्व प्रदान करता है एवं अन्य लोगों की श्रेष्ठता तथा वैशिष्ट्य को उजागर करने हेतु नींव/ढांचा तैयार करता है।

वाद्यवृन्द की प्रस्तुति के दौरान एक सफल संगीतज्ञ का यह दायित्व है कि वह उस समूह के प्रत्येक कलाकार की खूबी जाने और प्रस्तुतिकरण के समय उसे समन्वित रूप से उचित अवसर प्रदान कर एक उम्दा तथा बेहतरीन प्रदर्शन के लिये प्रेरित करे।

सुगम फिल्म संगीत भारतीय संगीत की एक ऐसी विधा है जो अपनी शैशवावस्था से ही नवाचार को आत्मसात् किये हुए है। भारतीय चित्रपट संगीत की विभिन्न अवस्थाओं में संगीतकारों ने समय–समय पर प्रचलित तथा अप्रचलित वाद्यों के कौशलयुक्त प्रयोग द्वारा इस विधा को और भी अधिक सुश्रव्य और नवीन बनाकर श्रोतृवृन्द के सम्मुख प्रस्तुत किया है।

सुगम चित्रपट संगीत में प्रबन्धन एवं सहयोग जिन बिन्दुओं पर अपेक्षित है, वे इस प्रकार हैं–

- जोखिम उठाकर नवाचार की प्रस्तुति।
- सामूहिक कार्य एवं नेतृत्व।
- व्यावसायिक सफलता हेतु व्यापक आकर्षण।
- आत्मविकास।
- कार्यस्थल पर सफल सामाजिक प्रभाव (लोकप्रियता)
- नवीन चुनौतियों को अंगीकार करने की क्षमता।
- परिवर्तन की दशा में पुनर्आत्मावलोकन।
- अपने प्रतिद्वन्द्वियों के साथ सहअस्तित्व, सहयोग के साथ रहते हुए सदैव कुछ नया सीखने की तीव्र इच्छा।
- शास्त्रीय तथा उपशास्त्रीय – इन दोनों विधाओं के वैविध्य एवं सर्वोत्तम अंश का ज्ञान।

तेजी से बढ़ती वैश्विक अर्थव्यवस्था मे सफलतम व्यवसाय नवाचार, लचीलापन एवं अनुकूलन की अपरिहार्यता को अंगीकार कर रहे हैं। जिसे हमें हमारे व्यवसाय में भी स्वीकार करने से लाभ ही होगा। फ्यूजन संगीत अपने आपमें एक नवाचार है। आधुनिक युग में इस प्रकार का संगीत अत्यधिक लोकप्रिय है। परम्परागत संगीत में पाश्चात्य संगीत का कुशलतापूर्वक मिश्रण आज के युग में नई पीढ़ी को शास्त्रीय संगीत की ओर आकर्षित करने का एक सफल माध्यम बन गया है। इस प्रकार के संगीत को समाज की भी स्वीकृति मिल गई है।

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

नवाचार, लचीलापन एवं अनुकूलन (Flexibility & Adaptability) को हम फ्यूजन म्यूजिक के अनिवार्य अंग कह सकते हैं। जिन बिन्दुओं के माध्यम से हम संगीत के क्षेत्र में इन्हें देख सकते हैं अथवा जिन्हें आत्मसात् करके अपनी बेहतर प्रस्तुति दे सकते हैं वे हैं –

- सृजनात्कता की आवश्यकता।
- कला को दक्षता के साथ अधिग्रहीत करना।
- समय–प्रबन्धन।
- साझा उत्तरदायित्व।
- ऊर्जा एवं सहक्रिया।
- रचनात्मक तरीके से अपने भावों के प्रकटीकरण की क्षमता।
- अभ्यास एवं तत्पश्चात् एक सफल प्रदर्शन।

इस प्रकार हम देखते हैं कि सफल कार्यनिष्पादन हेतु प्रबन्धन एवं नेतृत्व में उत्कर्ष निरन्तर एवं नियमित रूप से अपेक्षित है। बदलते समय के साथ कदम से कदम मिलाकर चलना वर्तमान युग की मांग है। संगीत का क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं है। अपनी परम्परागत चीज़ों को अक्षुण्ण रखते हुए उनमें हम किस प्रकार संशोधन एवं नवाचार कर सकते हैं, यह निश्चय ही शोध का विषय है। साथ ही हमें बदलाव को (हमारे जीवनमूल्य अछूते रखते हुए) उदारता के साथ अंगीकार करना होगा। जिसके लिये जोखिम का मूल्यांकन, नेतृत्व का क्रमावर्तन (Rotation) तथा कार्यनिष्पादन (Performance) के दौरान एक–दूसरे के विचारों तथा भावनाओं का सम्मान अपरिहार्य है।

इन सभी बिन्दुओं को अमल में लाने पर नेतृत्व, सहयोग, प्रबन्धन एवं नवाचार में संगीत निश्चित रूप से एक रूपकालंकार सिद्ध होगा।